बच्चों ने गीता सुना। और कोई भी सत्सुग आद में कब रिकॉर्ड पर नही समझाते है। हो शास्त्र सुनाते है। जैसे गुरुद्वारे में ग्रन्थ का दो वचन निकालते है फिर कथा करने वाले बैठ उसका विस्तार करते है। रिकॉर्ड पर बैठ समझावें यह कब होता नही । अब बाप बैठ समझाते है कि यह सबहै भक्ति मार्ग के। बच्चों को समझाया गया है कि ज्ञान अलग चीज है। जो एक निराकार शिव से ही मिल सकते है। इसको कहा जाता रूहानी ज्ञान। ज्ञान तो बहुत प्रकार के होते है नॉ। कोई से पूछा जावेगा यह गलीचा कैसे बनाते हो तुमको ज्ञान है? हरचीज का ज्ञान होता है। यो है सब जिस्मानी बातें। बच्चे जानते है हम आत्माओं का रूहानी बाप वो एक है। उनका जिस्म दिखाई नही पड़ता है। उस निराकार का चित्र भी सालीग्राम मिसल। उनको ही परमात्मा कहते है। उनको कहा ही जाता है निराकार। मनुष्य जैसा आकार नही है। नही तो हर एक वस्तु का आकार होता है। जो भी वस्तुयें है उन सबमें छोटी से छोटी है आत्मा का आकार। इसको कुदरत ही कहेंगे। बहुत छोठी है जो इन आखों से देखनेमें भी नही आती है। तुम बच्चों को दिव्य दृष्टी मिली है जिससे सब सा० करते हो। जो प्रकट हो गया है उसको दिव्य दृष्टी दवारा देखा जाता है। पहले नवधा में तो यह प्रकट हो गये है। अब फिर आये है। तो इनका भी सा० होता है। है बहुत सुक्ष्म। इससे समझ सकते है आत्मा सबसे अतिसुक्ष्म है। पहले-2आत्मा का ही ज्ञान दिया जाता है। सिवाय परमात्मा के आत्मा का ज्ञान कोई दे नही सकते। यह भीकई मनुष्य समझते है हम आत्मा है। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। परन्तु आत्मा को यथार्थ रीती नही जानते है। बाप कहते है मैं जो हूं जैसा हूं मुझे यथार्थ रीती नहीजान सकते है वैसे ही आत्मा को भी यथार्थ रीती नही जान सकते है। दुनिया में तो मनुष्यों के अनेक मत है। कोई कहते है आत्मा लीन हो जाती है। कोई क्या कहते है। अब तुम बच्चों ने जाना है सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सबकी बुधी में एक ही रीती बैठ नही सकता। बड़ी-2यह बुधी में बिठाना होता है कि हम आत्मा है। हमको ही 84जन्मों का पार्ट बजाना है। हम आत्मा बहुत छोटी है। परम पिता परमआत्मा भी इतना ही छोटा है। अब बाप कहते हो अपने को आत्मा समझो मुझ बाप को जानो और याद करो। यह बड़ी समझ की बात होती है। इनका नाम ही शिव है। और सबको आत्मा ही कह कहा जाता है। आत्माशरीर में आती है तो शरीर पर नाम पड़ता है। उनकी आत्मा का ही नाम शिव है। उनका शरीर तो है नही। और सब है आत्मायें परन्तु नाम शरीर पर पड़ता है। उनका शरीर न हो है। कहते है मै इनमें प्रवेश कर आत्माओं को ज्ञान देता हूं। तुम बच्चे अपने को आत्मा नही समझते हो इस लिये तुम्हारी नजर इस शरीर पर चली जाती है। अपने को आत्मा निश्चय नही करते हो। वास्तव में तुमको इनका (ब्रह्मा का)फोटो भी नही रखना चाहिये। बाबा का फोटो कोई मांगते है तो बाबा झट समझ जाते है यह शिव बाबा को याद नही करते है तब तो इनका चित्र मांगते है। तुम्हारा वास्तव में इनसे तो कोई कामनही है। सर्व का सदगती दाता तो वो शिव बाबा है। उनकी मत पर हम सबको सुख देते है। इनको भी अंहकार नही आता है कि हम यह सब कुछ कर रहे है। वो बाबा नॉ होता तो हम बन्दर के बन्दर रह जाते। जितना-2बाप को याद करते है उतना बन्दरपना निकलता जाता है। बन्दरपना नही निकलता है तो समझा जाता है बाप को याद नही करते है। अपने को आत्मा निश्चय नही करते है। मनुष्य तो नॉ आत्मा को नॉ बाप को जानते है। इसलिये ही जानवर से भी बदतर कहा जाता है। सर्वव्यापी का ज्ञान भी भारतवासीयों नेहि फैलाया है। फैलाया भी इस गीता से है। तुम बच्चे अब समझ गये हो। तुम्हारे में भी जो सविसिकुल बच्चे है वो समझते है। बाकी सब उतना नही समझते है। अगर बाप की पूरी पहचान बच्चों को होती तो
****
बाप को याद करे, अपने में दैवीगुण भी धारण करते। शिव बाबा बैठ तुम बच्चों को समझाते है यह है नई बातें। ब्राह्मण भी तीखे चाहिये। प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण कब कब होते है यह भी दुनिया में किसीको पता नही है। ब्राह्मण तो ढेर के ढेर है परन्तु वो है कुखवंशावली। यो कोई मुखवंशावली ब्रह्मा

की सन्तान नही है। ब्रह्मा की सन्तान को तो वैसा बाप से वर्सा मिलता है। तुमको अब वर्सा मिल रहा है नाँ। तुम ब्राह्मण अलग हो। वो अलग है। तुम ब्राह्मण होते ही हो संगम पर। वो होते है दवापुर कलियुग में। यह संगमयुगी ब्राह्मण ही अलग है। प्रजापिता ब्रह्मा के ढेर के ढेर बच्चे है। अब इन के बाप को भी प्रजापिता ब्रह्मा कहेंगे क्यों कि बच्चे पैदा करते है। परन्तु वो है जिसम के बाप। यह बाप तो कहेंगे सभी आत्मायें हमारे बच्चे है। तुम हो मीठे-2 रूहानी बच्चे। यह किसीको भी समझाना बहुत सहज है। शिव बाबा को अपना शरीर नही है। शिव जयन्ती मनाते है परन्तु उनका शरीर देखने में नही आता। बाकी और सबको शरीर है। शरीरों पर ही नाम पड़ता है। आत्मा को आत्मा ही कहा जाता है। उस एक ही आत्मा का नाम शिव है। और सब आत्माओं को अपने-2 शरीर है। शरीर पर नाम पड़ता है। परमात्मा के शरीर का नाम नही है। इसलिये उनको परम-आत्मा कहा जाता है। उनकी आत्मा का ही नाम शिव है। वो कब बदलता नही है। शरीर तो बदलते है तो नाम भी बदल जाता है। शिव बाबा कहते है मैं तो सदैव ही निराकार परमात्मा हूँ। ड्रामा प्लान अनुसार अभी यह शरीर लिया है। सन्यासियों का भी नाम बदलता है। तुम्हारा भी नाम बदला है। परन्तु कहाँ तक नाम बदलते रहेंगे। कितने भागन्ती हो गये। जो उस समय थे उनका नाम रख दिया। फिर नाम ही नही रखा। इसलिये अब नाम ही नही बदलते है। किसीपर भी अब विश्वास नही रहा है। माया बहुतों को हरा देती है तो भागन्ती हो जाते है। इसलिये बाबा किसीका भी नाम नही बदलते है। किसका रख कर किसका नाँ रखें? वो भी ठीक नही। कहते है तो सब है बाबा हम अब आपके हो चुके। परन्तु यथार्थ रीती हमारे होते थोड़े है। बहुत है जो वारिस बनने के राज को भी समझते नही है। हम बाप का कैसे बनें। विरला ही कोई समझते है। बाबा के पास मिलने आते है परन्तु वारिस नही है। विजयमाला में नही आ सकते। कोई अच्छे-2 भी समझते है हम वारिस है, परन्तु बाबा वारिस है नही। यह राज़ समझना भी मुश्किल है। कोई-2को बाबा समझाते है वारिस बनना किसको कहा जाता है। भगवान को कोई वारिस बनावे तो मिलकियत देनी पड़े। तो भगवान फिर वारिस बनावे। भला कितने थोड़ों को बनाते है। यह भी कोई बाबा से पूछे तो बाबा बता सकते है कि तुम पास बनने के हकदार हो वाँ नही। यह बाबा भी तो, वो बाबा भी बता सकते है। यह तो कामन बात है समझने की। वारिस बनने का भी बहुत रिवर (अक्ल) चाहिये। कब किसीको सपने में भी याद नही होगा देखते भी हो कि यह विश्व के मालिक थे। परन्तु वो मालिकपना पना किससे लिया यह भी कोई नही जानते है। कुछ भी पता नही। अभी तुम्हारी ऐम आब्जेक्ट तो सामने है। बच्चे भी कहते है हमतो सूर्यवंशी राजा रानी बनेंगे। (ल न बनेंगे) नाँ कि राम सीता। राम सीता की भी निन्दा की हुई है शास्त्रों में। ल न. की कब कर निन्दा नहीं सुनेंगे। बिलकुल नही। शिव बाबा की भी निन्दा है। इनकी बिलकुल ही नही है। इनकी निन्दा कोई करते कभी देखा नही होगा बाप कहते है फिर अब मैं तुम बच्चों को इतना ऊँच ते ऊँच बनाता हूँ। मेरे से भी बच्चे तीखे हो जाते है। इन ल न. की कभी भी कोई निन्दा नही करेंगे। श्री कृष्ण की आत्मा तो वो है ही परन्तु नाँ जानने कारण उनकी निन्दा कर देते है। ल न. का मन्दिर भी बड़ा खुशी से बनाते है। वास्तव में बनाना चाहिये राधा कृष्ण का। क्यों कि वो सतोप्रधान है। यह उनकी युवा अवस्था है। तो उनको सतो कह सकते है। वो छोटे है इसलिये सतोप्रधान कहेंगे। छोटा बच्चा महात्मा महान कहा जाता है। जैसे छोटे बच्चे को यहाँ विकार आदि का पता नही रहता है वैसे वहाँ बड़ों को पता नही रहता है कि विकार क्या चीज होती है। यह 4 भूत वहाँ होते ही नही। विकारों का तो जैसे कि पता ही नही। काम की चेष्टा भी रात को होती है। देवतायें है ही दिन में तो काम की चेष्टा की तो बात ही नही। विकार कोई होते ही नही। तुम बच्चे जानते हो दिन होते ही हमारे सब विकार चले जावेंगे। पता भी नही रहता है कि विकार क्या च चीज होती है। यह रावण का विकारी घर है। यह है ही विशस वर्ल्ड। वहाँ विकार की कोई बात ही

नही। उसको कहा ही जाता है ईश्वरिय राज्य। अभी है आसुरी राज्य। मनुष्य यह भी नही जानते कि अभी आसुरी राज्य है। और ईश्वरिय राज्य को भी नही जानते। तुम सब कुछ जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार दूर करते है। कोई भी मनुष्य समझ नही सकते है कि यह इतने ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ बच्चे ही ठहरे। सब याद करते है शिव बाबा को। ब्रह्मा को भी नही। यह खुद भी कहते है शिव बाबा को ही याद करो जिससे ही विकर्म विनाश होंगे। और कोई को भी याद करने से विकर्म विनाश नही होंगे। गीता में भी कहा है मामेकम याद करो। अब यह कृष्ण तो कह नही सके। वर्सा मिलता ही है निराकार बाप से। अपने को जब आत्मा समझें तब निराकार बाप को याद करें। मैं आत्मा हूँ पहले यह पक्का निश्चय करना चाहिये। मेरा बाप परमात्मा है। वो कहते है मुझे याद करो तो मैं तुमको वर्सा दूँगा। मैं सबको सुख देने वाला हूँ। मैं ही सब आत्माओं को शान्ती धाम में ले जाता हूँ। जिन्होंने कल्प पहले बाप से वर्सा लिया है वो ही जरूर आकर वर्सा लेंगे। ब्राह्मण बनेंगे। ब्राह्मणों में भी कच्चे और पक्के है। मातेले भी बनेंगे, सौतेले भी बनेंगे। हम तो निराकारी शिव के वंशावली है। जानते हो बादशाही कैसे बदलती है। अब ब्राह्मण बनने बाद हमको वापस जाना है। अभी आत्माओं को शरीर छोड़ वापस जाना है। पाण्डव और कौरव दोनों को शरीर छोड़ना है। तुम यह ज्ञान के संस्कार ले जाते हो। फिर इस अनुसार प्रारब्ध पाते हो। वो भी ड्रामा में ही नूँध है। फिर ज्ञान का पार्ट खलास हो जाता है। तुमको 84 जन्मों बाद फिर अभी ज्ञान मिला है। यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। तुम फिर प्रारब्ध भोगते हो। वहाँ कोई और धर्मवालों के चित्र नही रहते है। तुम्हारे भक्ति मार्ग में भी चित्र रहते है। सतयुग में किसीका चित्र आद नही रहता। तुम्हारे चित्र आलराऊँड भक्ति मार्ग में रहते है। तुम्हारे राज्य में और कोई का चित्र नही। सिर्फ देवतायें ही रहते है। इससे ही समझते है आदी सनातन देवी देवता धर्म ही है। इस ज्ञान को सिमरण कर अति इन्द्रिय सुख में रहना है। बहुत पुआईन्टस है। परन्तु बाबा समझते है कि माया घड़ी-2 भुला देती है। एक तो यह याद रहना चाहिये शिव बाबा हमको पढ़ा रहे है। वो है ऊँच ते ऊँच। हमको अब वापस घर जाना है। पहली-2 बात गीता को सिध किया तो सब शास्त्र झूठे सिध हो जावेंगे। झूठे शास्त्र हमको सुनने नही है। तुम तो सच्चे बाप से सच्ची ही सुनते हो। बाकी मनुष्यों की बात सुननी ही नही है। वो सब नुकसान करने वाली है। जो भी शास्त्र आद सुनाते है वो है भक्ति मार्ग के। कभी भी कोई पूछे तुम शास्त्र पढ़ते हो? बोलो:- यह सब है भक्ति मार्ग के। ज्ञान का सागर तो एक ही परमपिता परमात्मा है। ज्ञान सूर्य प्रगटया अज्ञान अंधेर विनाश। अन्धेरा रात को कहा जाता है। रात रावण बनाते है। दिन राम बनाते है। रात है भक्ति। दिन ज्ञान को कहा जाता है। कितनी सहज बातें है। सारा मदार है याद पर। हमको देवता बनना है दैवी गुण भी धारण करने है। 5 विकार है भूत। क्रोध का भूत देह अभिमान का भी भूत होता है। कोई में जास्ती भूत होता है कोई में कम। तो ब्राह्मण बच्चों को पता है कि यह भूत है। नम्बरवन है काम का भूत। सेकिंड में है क्रोध का भूत। कोई रफ-डफ बोलते है तो बाबा कहते है यह तो क्रोध की रूसवी है। यह भूत निकल जाना चाहिये। भूत निकालना भी बड़ा मुश्किल है। क्रोध एक दो को रंजाता है। मोह में बहुतों को रंज नही होता है। जिनको मोह है उनको ही रंज होगा। इसलिये बाप समझाते है इन भूतों को भगाओ। पढ़ाई पर अटेंशन और दैवी गुणों पर भी अटेंशन होना चाहिये। कई बच्चों में तो क्रोध का अंश भी नही है। कोई तो फिर क्रोध में आकर बहुत लड़ते है। किसीको फिर मारने में भी देरी नाँ करें। बच्चों को ख्याल करना चाहिये हमको दैवी गुण धारण कर देवता बनना है। कब गुस्से से बात नही करनी चाहिये। कोई गुस्सा करते है तो समझना चाहिये इसमें इस समय क्रोध का भूत है। वो जैसे भूत नाथ, भूत नाथनी बन जाते है। ऐसे भूत वालों से कब बात भी नही करनी चाहिये। एक ने क्रोध में आकर बात की, तो दूसरे में भी भूत आ गया तो दो नव आपस में लड़ पड़ेंगे। भूतनाथ, नाथनी अक्षर बड़ा छी-2 है। भूत की प्रवेशता नाँ हो जाये इस

कीं=छ इसलिये किनारा कर लेते हैं। भूत के सामने खु खड़ा भी नही होना चाहिये। नही तो प्रवेशता हो जावेगी। बाप आकर आसुरी बैं गुण निकाल कर ईश्वरिय गुण धारण कराते है। बाप कहते हैं मैं आया ही हूं दैवी गुण धारण करवा कर देवता बनाने। बच्चे भी जानते है हम दैवी गुण धारण कर रहे है। देवताओं के चित्र भी सामने है। बाबा नें कल भी समझाया था भूत नां निकलते है तो उसको भी कुतु= कुत्ते का पूछ समझों। कुत्ते का पूछ कब सीधा नही हो सकता है। क्रोध वालें सें एकदम किनारा कर लेना चाहिये। कहीं हमारे में भी क्रोध नां आ जावें। नही तो सौना पाप चढ जावेगा। कितनी अच्छी समझानी बच्चों को बाप देते है। बच्चे भी समझते है बाबा हमको कल्पपहले मुआफिक समझाते है। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझते ही रहेंगें। अपने ऊपर भी रहम करना है। दूसरों पर भी रहम करना है। इ कोई-2अपने पर रहम नही करते, दूसरों पर करते है तो वो तो ऊंच चढ़ जाते है खुदविकारों पर जीत पहनते नही। दूसरों को समझाते है वो जहती पहने लेते है। ऐसे भी वण्डर होतें है। अच्छा मीठे-2 बच्चों को याद प्यार और गुड मानिंगओम

18-1-67:-प्रातः क्लासकीं बाकी प्वाइन्टः-देहली में तो बहुत पढ़े लिखे रहते है। यह कामकर सकते है। तु तुम्हारी कैपीटल भी दिल्ली होनी है। दिल्ली को पहले परिस्तान कहते थे। राम सम्प्रदाय की कैपीटल अब रावण सम्प्रदाय की बन गई है। देहली को परिस्तान कहते थे परन्तु अब तो कब्रिस्तान है। तो यह सब बातें बच्चों की बुद्धि में आनी चाहिये। खुशी मे रहना चाहिये बहुत मीठा बनना चाहिये। सबको प्रेम सें चलाना चाहिये। बहुत-बहुत-बहुत-मीठा बनना है। सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण बनना है। अभी कोई कला नहीहै। अभी चढ़ती कला होती जाती है। धीरे-2चढते तो है नां। तो बाबा शिव जयन्ती के लिये इशारा देते रहते है हर प्रकार सें। समझती जावेंगें नां इनकी कालेज तो बहुत बड़ी है।

(यह पुआइन्ट हम लिख चुके है पूरा।) (यह हमने दोबारा भूल से लिख दी है)

रात्री क्लासः-16-1-67 शिव बाबा के यज्ञ का काम दिल वा जान सिक्क वा प्रेम सें करना होता है। बाप भी दिल वा जान सें आवरतुथ बच्चों को पढ़ाते है। परन्तु माया ऐसी है जो समझते भी है=== बाबा पढ़ाते है। फिर भी इतनी खुशी क्यों नही रहती। इतनी सहज बात भी माया भूला देती है। माया बाप की मत पर चलने नही देती। ऊंच तें ऊंच बाप। इतना ऊंच पद देनें वाले उनका भी कहना बच्चे कभी नही मानते है। माया प्रबल है नां। अजब तमाशा, अजब खेल है। पढाई भी यह वण्डरफुल है। जो कोई बच्चे भी नही जानते। बाबा के डायरेक्शन पर हम अमल क्यों नही करते है।' कह देते है अहो माया कितना हमको नाक सें पकड़ नीचे गिरा देती हो।' कैसीफुल बच्चे फील करते है हमने हारा खाई। घड़ी-2 हार खाते है फिर खड़े हो जाते है फिर हार खाते है। सबकें साथ माया की लड़ाई चलती रहती है। जब कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तबफिर विनाश का समय आ जावेगा। इसलिये बाप के साथ बड़ा अच्छा प्रेम चाहिये। बाप के साथ भक्ति मार्ग में प्रतिज्ञा की थी अब सम्मुख कहते है मेरे तो एक बाप दूसरा नां कोईशिवाय आपेके औरकोई के साथ दिल नां लगावेंगें। फिर भी हारते रहते है। औह=इ खुद समझाते है हम हारते है। कई बच्चे अपना बताते हैऐसे ऐसे होता है। ढेर पुआइन्टस है जिसमें हारते है। और इस युद्ध को तुम्हारे सिवाय कोई नां जानें। बाप भी कहतेहै माया बड़ी प्रबल है। तुमको बहुत हैरान करती है। तुमसें कोई पूछेंगें और सब धर्मवाले रावण राज्य में ही आते है?बोलों नही। रावण राज्य शुरू होता है भारत में राम राज्य रावण राज्य भारत की ही बात है। और धर्म जब सतो रजो सें पास करते है तो फिर रावण के चम्बे में आते है। पहले-2फ सता है भारत। फिर तो सब तमोप्रधान बननें से रावण के चम्बे मे फंसते है। सतो रजो तमो सें सबको पास करना होता है। ओम शान्ती गुड नाईट